# 00 विषय-परिचय, पाठ्यक्रम एवं विषय-सूची

**प्रशासनिक नीतिशास्त्र क्या और क्यों | आधिकारिक पाठ्यक्रम के 9 बिंदु | पूरी पुस्तक की विषय-सूची**

📖 **कहानी: "जनता के अधिकारी" — एस. आर. शंकरन (एक सच्ची घटना)**

आंध्र प्रदेश संवर्ग के भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी **एस. आर. शंकरन** (1934–2010) को लोग प्यार से **"जनता का अधिकारी"** कहते थे। उनका सादा जीवन, ईमानदारी और काम के प्रति समर्पण ही उनकी पहचान था — निजी संपत्ति जोड़ने की उन्हें कभी चाह नहीं रही।

उन्होंने अपने पूरे सेवाकाल में समाज के सबसे कमज़ोर लोगों — **दलितों, आदिवासियों और बंधुआ मज़दूरों** — को केंद्र में रखा। बंधुआ मज़दूरी (क़र्ज़ के बदले किसी व्यक्ति से जबरन, लगभग बिना मज़दूरी के काम करवाने की प्रथा) समाप्त करने वाले क़ानून — बंधुआ मज़दूरी प्रथा (उन्मूलन) अधिनियम, 1976 — का ज़मीनी क्रियान्वयन, अनुसूचित जातियों-जनजातियों का कल्याण और भूमि-सुधार उनके काम के मुख्य क्षेत्र रहे। फ़ाइल पर निर्णय लेते समय उनका प्रश्न सीधा होता था — **"इससे सबसे ग़रीब आदमी को क्या मिलेगा?"** उनकी निष्पक्षता पर इतना भरोसा था कि सेवानिवृत्ति के बाद भी कठिन सामाजिक विवादों में उन्हें मध्यस्थ बनाया जाता था।

उनके जीवन में इस पूरी पुस्तक के मूल्य एक साथ दिखते हैं — **सत्यनिष्ठा, कर्तव्य, गांधी जैसी सादगी, सामाजिक न्याय** और कठिन परिस्थितियों में **विवेकपूर्ण निर्णय।** उनकी ईमानदारी सत्यनिष्ठा का, कमज़ोर वर्गों के लिए लगातार काम करना कर्तव्य और सामाजिक न्याय का, निजी संपत्ति न जोड़ना गांधी जैसी सादगी का, और विवादों में निष्पक्ष मध्यस्थता विवेकपूर्ण निर्णय का उदाहरण थी। इससे स्पष्ट है कि प्रशासनिक नीतिशास्त्र कोई किताबी विषय नहीं — यह अधिकारी के रोज़ के निर्णयों में जीने वाली चीज़ है।

🔑 **इस कहानी से सीख:** प्रशासनिक नीतिशास्त्र का सार है — शक्ति को सेवा में बदलना (यानी पद से मिले अधिकारों का प्रयोग अपनी सुविधा या रौब के लिए नहीं, बल्कि जनता की भलाई के लिए करना), और हर निर्णय में सबसे कमज़ोर व्यक्ति को केंद्र में रखना।

## 1. विषय-परिचय — प्रशासनिक नीतिशास्त्र क्या और क्यों?

### 🔍 आसान परिभाषा: प्रशासनिक नैतिकता (Administrative Ethics)

📘 **परिभाषा:** वह अध्ययन-क्षेत्र जो यह परखता व सिखाता है कि एक लोक सेवक को अपने अधिकार, विवेकाधिकार (नियमों की सीमा में अपनी समझ से निर्णय लेने की छूट — Discretion) व शक्ति का प्रयोग करते समय किन नैतिक मूल्यों — सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, जवाबदेही, करुणा, पारदर्शिता — से निर्देशित होना चाहिए, विशेषकर तब जब क़ानून व नियम किसी स्थिति में मौन हों या स्वयं दुविधा में डाल दें।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे एक डॉक्टर के पास चिकित्सा-ज्ञान (Knowledge) होने के बावजूद 'हिप्पोक्रेटिक शपथ' (रोगी को हानि न पहुँचाने का नैतिक संकल्प) उसे यह तय करने में मदद करती है कि मरीज़ के हित में सही निर्णय क्या है — ठीक उसी तरह एक प्रशासक के पास क़ानूनी ज्ञान होने के बावजूद नैतिकता ही उसे यह तय करने में मदद करती है कि किसी जटिल स्थिति में 'सही' निर्णय क्या है। 🏠 **उदाहरण:** जब कोई ज़िला कलेक्टर किसी आपदा में नियम-प्रक्रिया के पूरा होने का इंतज़ार किए बिना तुरंत राहत पहुँचाने का विवेकाधिकार-आधारित निर्णय लेता है — वह प्रशासनिक नैतिकता का ही प्रयोग कर रहा होता है, क्योंकि उस समय लोगों की जान बचाना काग़ज़ी प्रक्रिया की औपचारिकता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

**नीतिशास्त्र (Ethics)** दर्शनशास्त्र की वह शाखा है, जो मानव आचरण के सही-ग़लत और उचित-अनुचित का व्यवस्थित अध्ययन करती है; "एथिक्स" शब्द यूनानी शब्द **"एथोस"** (चरित्र, स्वभाव) से बना है। क़ानून न्यूनतम आचरण तय करता है, जबकि नैतिकता सर्वोत्तम आचरण की ओर ले जाती है। उदाहरण के लिए, क़ानून केवल इतना कहता है कि अधिकारी रिश्वत न ले, पर नैतिकता यह भी कहती है कि वह हर फ़रियादी से विनम्रता से मिले और उसका काम बिना टाले समय पर करे। एक लोक सेवक को प्रतिदिन ऐसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है, जहाँ नियम स्पष्ट निर्देश नहीं देते — वहाँ नैतिक समझ ही सही राह दिखाती है, और यही समझ भावी सेवाकाल की वास्तविक दुविधाओं से निपटने का मानसिक ढाँचा (Framework) तैयार करती है।

> **“ जैसे जीभ पर रखे शहद या विष का स्वाद न लेना असंभव है, वैसे ही सरकारी धन का काम करने वाले के लिए उसमें से थोड़ा भी न चखना कठिन है; और जैसे पानी में तैरती मछली कब पानी पीती है, यह जानना कठिन है, वैसे ही सरकारी कर्मचारी कब धन का दुरुपयोग करता है, यह जानना कठिन है। ”** — कौटिल्य (चाणक्य; चंद्रगुप्त मौर्य के गुरु व मंत्री) — अर्थशास्त्र

### 📖 कहानी: पुस्तक की यात्रा — "नौ द्वार: नई उपखंड अधिकारी कविता का पहला वर्ष"

(यह एक काल्पनिक कहानी है। इसका हर पड़ाव पुस्तक के एक अध्याय से जुड़ा है।)

कार्यभार सँभालते ही **कविता** को पिता का पत्र मिला — "कुर्सी बदलेगी, पर मूल्य मत बदलना" **(अध्याय 1)**। नहर के पानी पर दो गाँवों के झगड़े में उन्होंने समाज की व्यवस्था (ऋत — वह शाश्वत नियम-व्यवस्था जो प्रकृति और समाज को संतुलन में रखती है और सब पर समान रूप से लागू होती है) और नागरिक के ऋण (यह भाव कि हर व्यक्ति पर समाज, पूर्वजों और प्रकृति का क़र्ज़ है, जिसे अपने कर्तव्य निभाकर चुकाना होता है) को समझा **(अध्याय 2)**। एक रिश्तेदार की फ़ाइल आई, तो उन्होंने ख़ुद को उस मामले से अलग कर लिया, क्योंकि अपने ही रिश्तेदार के मामले में निर्णय लेने से हितों का टकराव (Conflict of Interest) होता और उनकी निष्पक्षता पर सवाल उठता **(अध्याय 3)**।।

बाढ़ की रात उन्होंने बिना फल की चिंता किए काम किया — यानी प्रशंसा या पुरस्कार की परवाह छोड़कर केवल कर्तव्य समझकर, जिसे गीता में निष्काम कर्म कहा गया है **(अध्याय 4 — गीता)** और राहत बाँटते समय सबसे पहले सबसे दूर की झोपड़ी तक पहुँचीं, क्योंकि गांधी जी का जंतर (ताबीज़ जैसा सूत्र) सिखाता है कि कोई भी निर्णय लेते समय सबसे ग़रीब और कमज़ोर व्यक्ति का चेहरा याद करो और सोचो कि इससे उसे क्या लाभ होगा **(अध्याय 5 — गांधी का जंतर)**। एक नीति पर उन्होंने बेन्थम (अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख), कांट (कर्तव्य और सब पर समान लागू होने वाला नियम) और अरस्तू (सद्गुण और संतुलित 'मध्यम मार्ग') की कसौटियाँ लगाईं **(अध्याय 6)**। एक AI (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) प्रणाली ने एक ज़रूरतमंद का नाम लाभार्थी-सूची से काट दिया, तो उन्होंने मशीन के निर्णय को आँख मूँदकर मानने के बजाय अपनी अंतरात्मा की सुनी और मामले की स्वयं जाँच की **(अध्याय 7)**; और उद्योग को छूट के प्रस्ताव पर सामाजिक न्याय तथा जवाबदेही की कसौटी लगाई — यानी यह परखा कि इस छूट का लाभ और बोझ समाज के किन वर्गों पर पड़ेगा और इस निर्णय का हिसाब जनता को कैसे दिया जाएगा **(अध्याय 8)**।।

वर्ष के अंत में अकादमी में उन्होंने अपनी हर कठिन परिस्थिति एक केस स्टडी की तरह सुनाई — दुविधा, हितधारक, विकल्प, निर्णय और औचित्य — यानी पहले समस्या में छिपी दुविधा पहचानी, फिर उससे प्रभावित लोगों (हितधारकों) को गिना, सभी संभव विकल्प तौले, एक निर्णय चुना और अंत में बताया कि वह निर्णय सही क्यों था **(अध्याय 9)**।।

🔑 **इस कहानी से सीख:** यह पुस्तक मूल्यों की नींव से शुरू होकर भारतीय और विश्व-दर्शन, प्रशासन की दुविधाओं, निर्णय के आधार और केस स्टडी के व्यावहारिक प्रयोग तक एक क्रमबद्ध यात्रा है।

## 2. आधिकारिक पाठ्यक्रम — इकाई-I : प्रशासनिक नीतिशास्त्र

पाठ्यक्रम में कुल **नौ बिंदु** हैं — आठ विषय-बिंदु और नौवाँ बिंदु इन्हीं विषयों पर आधारित गैर-तथ्यात्मक केस स्टडीज़ (ऐसी काल्पनिक प्रशासनिक परिस्थितियाँ जिनमें तथ्य याद करके नहीं, बल्कि नैतिक समझ से निर्णय लेकर उसका कारण बताना होता है)। इस पुस्तक में हर बिंदु के लिए एक अलग अध्याय है, यानी बिंदु और अध्याय का सीधा एक-एक मिलान है।

| क्र. | पाठ्यक्रम-बिंदु (हिंदी अर्थ, मूल शब्द कोष्ठक में) | पुस्तक में |
|---|---|---|
| 1 | नीतिशास्त्र एवं मानवीय मूल्य: महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन और शिक्षाओं से सीख। मूल्यों के विकास में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका।<br>(Ethics and human Values: Lessons from lives and teachings of great leaders, reformers and administrators. Role of family, society and educational institutions in inculcating values.) | **अध्याय 1** |
| 2 | नैतिक अवधारणाएँ — ऋत और ऋण; कर्मवाद से प्रेरणा। कर्तव्य की अवधारणा, शुभ (अच्छाई) और सद्गुण की अवधारणा।<br>(Ethical concepts Rit and Rin — Inspiration from Karmavada. Concept of Duty, concept of Good and Virtue.) | **अध्याय 2** |
| 3 | निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र। सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और गैर-पक्षपात का दार्शनिक आधार। उदारवादी समाज: पारदर्शिता, मीडिया और नौकरशाही।<br>(Ethics in private and public relationships. Philosophical basis of Integrity, impartiality and non-partisanship. Liberal Society: Transparency, media and bureaucracy.) | **अध्याय 3** |
| 4 | भगवद्गीता का नीतिशास्त्र और प्रशासन में इसकी भूमिका।<br>(Ethics of Bhagwad Geeta and its role in administration.) | **अध्याय 4** |
| 5 | गांधीवादी नीतिशास्त्र।<br>(Gandhian Ethics.) | **अध्याय 5** |
| 6 | भारत और विश्व के नैतिक विचारकों और दार्शनिकों का योगदान।<br>(Contribution of Moral thinkers, and Philosophers from India and World.) | **अध्याय 6** |
| 7 | प्रशासन में नैतिक चिंताएँ, दुविधाएँ और चुनौतियाँ। प्रशासनिक निर्णय-निर्माण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) बनाम अंतरात्मा।<br>(Ethical concerns, dilemmas and challenges in administration. Artificial Intelligence (AI) Versus Conscience in administrative decision making.) | **अध्याय 7** |
| 8 | नैतिक निर्णय-निर्माण का आधार: सामाजिक न्याय, मानवीय चिंताएँ, शासन में जवाबदेही। साधनभूत तार्किकता बनाम | **अध्याय 8** |

| क्र. | पाठ्यक्रम-बिंदु (हिंदी अर्थ, मूल शब्द कोष्ठक में) | पुस्तक में |
|---|---|---|
| | मूल्य तार्किकता।<br>(Basis of Ethical decision making: Social justice, humanitarian concerns, accountability in governance. Instrumental rationality versus value rationality.) | |
| 9 | उपर्युक्त विषयों पर आधारित गैर-तथ्यात्मक केस स्टडीज़।<br>(Non-factual Case Studies on the above mentioned topics.) | **अध्याय 9** |

## 3. पूरी पुस्तक की विषय-सूची

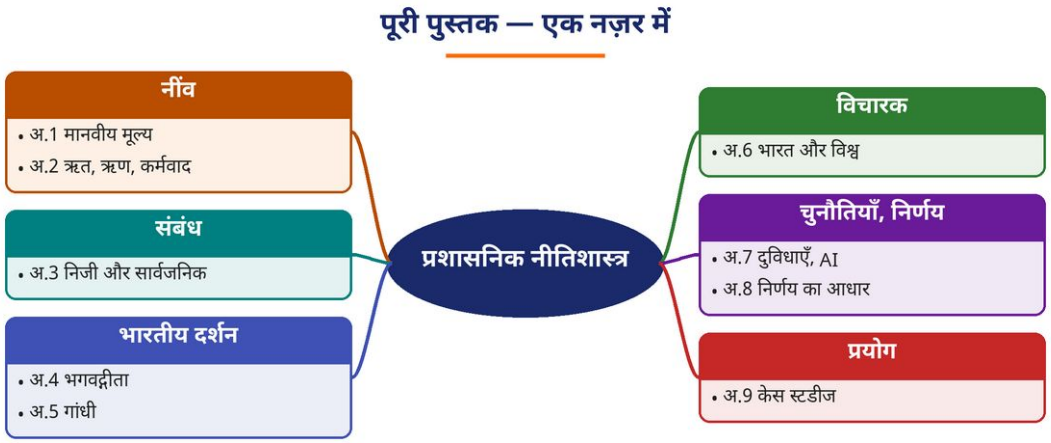


चित्र 0.1: *पूरी पुस्तक — एक नज़र में*

| अध्याय | शीर्षक | मुख्य विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| **00** | विषय-परिचय, पाठ्यक्रम एवं विषय-सूची | नीतिशास्त्र का परिचय, आधिकारिक पाठ्यक्रम | 2 |
| **01** | नैतिकता और मानवीय मूल्य | मानवीय मूल्य, महान व्यक्तित्वों से सीख, परिवार-समाज-शिक्षा की भूमिका | 5 |
| **02** | नैतिक अवधारणाएँ — ऋत, ऋण एवं कर्मवाद | ऋत, ऋण, कर्मवाद, कर्तव्य, शुभ और सद्गुण | 50 |
| **03** | निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र | सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, गैर-पक्षपात, पारदर्शिता, मीडिया | 75 |
| **04** | भगवद्गीता की नैतिकता और प्रशासन में भूमिका | निष्काम कर्म, स्थितप्रज्ञ, लोकसंग्रह, स्वधर्म | 99 |
| **05** | गांधीवादी नीतिशास्त्र | सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, ट्रस्टीशिप, सर्वोदय | 126 |
| **06** | नैतिक विचारक और दार्शनिक | भारत और विश्व के विचारक — सुकरात से आंबेडकर तक | 152 |
| **07** | प्रशासन में नैतिक चिंताएँ, दुविधाएँ और चुनौतियाँ | चिंताएँ, दुविधाएँ, हितों का टकराव, AI बनाम अंतरात्मा | 190 |
| **08** | नैतिक निर्णय-निर्माण का आधार | सामाजिक न्याय, मानवीय चिंताएँ, जवाबदेही, साधनभूत बनाम मूल्य तार्किकता | 216 |
| **09** | गैर-तथ्यात्मक केस स्टडीज़ | केस स्टडी का ढाँचा, 20 हल की गई परिस्थितियाँ | 236 |